अफ्रिका का राष्ट्रवाद है ऐसे अलग-अलग प्रकार के राष्ट्रवाद की चर्चा चली। अगर हम दक्षिण एशिया के बारे में बात करते हैं तो दक्षिण एशिया के बारे में कहा गया यहां पर भारतीय राष्ट्रवाद है। भारतीय राष्ट्रवाद। ठीक है, हम बहुत पुराने काल में नहीं जा सकते, परन्तु एक वृहद भारत । इस नाम से हम कभी-कभी शब्द प्रयोग करते हैं। हम कहते हैं कि कभी अफगानिस्तान को गांधार, गांधारी वहां से आती थी। हम कहते हैं कि लंका में राम रहे, राम गये वहां पर। वह लंका को जीतने के लिए नहीं गये थे। राक्षसी रावण की प्रवृति को पराजित करने के लिए गये थे। लंका को जीतने के लिए जाते तो अपना राज्य स्थापित करके आते। नहीं, वह वापस आ गये। क्यों? क्योंकि लंका भी इस वृहद भारत का हिस्सा है। राजनैतिक दृष्टि से अलग है, पाकिस्तान अलग है, बांग्लादेश अलग है, राज्य तो अलग-अलग हैं। परन्तु जैसे सांस्कृतिक दृष्टि से, जैसा कि मैंने कहा कि पाकिस्तान को 'कल्चरल हिस्ट्री आफ पाकिस्तान' उसमें वही बातें लिखनी पड़ी जिसके बारे में हमें भी गर्व है। आज भी अगर कोई कश्मीर, पाकिस्तान के अगर कोई तीर्थक्षेत्रों का नाम लेगा तो उनमें ननकाना साहिब का नाम आयेगा। उनमें कराची के आस-पास रहने वाली हिंगलाज माता का नाम आयेगा, बांग्लादेश के ढाकेश्वरी देवी का नाम आयेगा और वहां के लोगों को अजमेर शरीफ दरगाह अपना लगता है।

ये जो एक है खत्म होने वाला है क्या? और ये वृहद भारत जिसका एक कहीं न कहीं एक चिन्तन रहा है, एक जीवन की शैली रही है। हम सबकी बातें कई समान हैं। उन समान बातों को जागृत करते हुए इस सांस्कृतिक बातों के आधार पर ही जब कोई किसी अखण्ड भारत की बात करता है तो अखण्ड भारत की बात एक सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर, सांस्कृतिक बातों के आधार पर ही या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की कल्पना के आधार पर ही यह देश अखण्ड हो सकता है। हम राज्यों के अखण्ड होने की बात नहीं करते। आज भी नहीं करेंगे। और इसलिए ये कैसे होगा। तो इस चिति को समझकर, उसके मूल भाव को समझकर इस विराट राज्य जैसा कि मैंने कहा सारा इन बातों को मानने वाला समाज है, एक मनुष्य समूह है। वह उसको कभी न कभी मानता आया है। उसको संगठित शक्ति के रूप में जगाकर ही ये वृहद भारत हो सकता है। प्रयास करना पड़ेगा भविष्य में, उस दिशा में। सांस्कृतिक बातों को जगाते हुए चलना पड़ेगा। उस विराट को जागृत